

नमो श्री यशोवन्त चराय ॥ ॥ सिद्धासथमाह ॥ ^{क्रो} वासिष्ठ प्रगाथः कुपे सिद्धा कुम्भार्थ
 पाण्डुरासी सिद्धाद्य ५४ नयसंघमन आदि नृकवाहिः स्वापात्रज किं लक्ष्मी साहिकान
 वज्रपत्रिक मथय कस्य ॥ ॥ सचात्र नृमत्त सयं यगव्यः सिद्धथय यं कुयो ॥
 मत्तसपूजा पक्ष सासपूजा षट्थागिनिपूजा समानवत्रिपूजाः कंभवागुथ नृयनाम
 धिरु नयः मत्तसतयः उपाध्या न गगवापूजा ॥ सिद्धतय मद्नीरुय आदिका य ॥
 मत्तसथि सस्यवशिष्टाय समधि ॥ उपाध्या न किन्नरपूजा ॥ रावना ॥ सटिति शु
 न्नगानकसंनगानसविष्ट रं उदिग्धवज्रहि नं रं कानकिन्नरं को वसवजं विस्रवनि
 मधकस्य हि रं नयजपा कानवजय म्भसवजसल जासविगतमधकास ३४म्

हृत्कालविश्वदुस्त्रिभुवलयसिद्धिद्वारा नृसिद्धिः अटिती यज्ञसत्त्वत्रया सापनाविधि
त्यः तेषां कवीजया यवना माकृकृत्रे दिग्धयज्ञसूत्रस्य हेतवका सिवात्मा त्रिध
यत्र न हयं न त्रिकुम्भकथममनयाः कान्तस्य ज्ञात्मा सच यः कवययं विवनिधि
सजविष्णुविद्वानि नीलविनहजितं सूतस्य नत्रया विनं वक्रया डष्टात्कटवनजिज्ञा
पुनिसूत्रस्य तुल्यगयनत्रकवयं गीनं तुं १ खटसूत्रा नसातस्य प्रश्नकपात्रगत्रदि
नं गसतश्च वधिरसि नं लिखता दिराव्या ॥ सा साग्निरका पूजा ॥
कुम्भपूजा ॥ अथ यिपूजा ॥ यथा पूजा ॥ मन्त्रस्य थिलं कितनः कान्तसिधत्रदिगुसमय
रसतत्रसुहृदा जनः कलं रयं छाया ॥ आहवसंथास्य पूजातय ॥ यथा कुरावना ॥

वागुंथा वितावजवाप्राही त्रया पूषा पाता नूतपेन दवी नूपेनु श्रीयकु सस्वन नूपे विवित्तः नस्मा
नस्मी वाक् विजमयूया नानिना हानदवना पुव (अ) ॥ निलंजन ॥ गित हागतनना ॥ मूडास
हायना ॥ स्वदिदिमयूवे जानित हानदवना पुव न्य यथाकु मयकि य कसका वि जायका मय
वा गे का लु मय का लु स ल स ल य वे शायन माघ सिद्धि त्रया मतिटि विचीत्य नन हान स ल न
थागत पुव (अ) कात्यादिपत्रिन नु य कादि मूडा गे कात्यादि हलावा नयति मधि मय ॥ निरा
ऊन ना हा मि न का त्रियति पना मूडा धि छा न ॥ उं न्ना हं ॥ विधि (थ) पूजा पूषा दास पं सा घं लु नि
मक्त न य न ॥ स्वस्व मक्त न नाय रया नय निवि नू पं या पहा न पूजा ॥ गित ध प्रधन ॥ मूडानति
य ॥ पुहा उ था न ॥ यनी थ म हं का न वी ऊन यकु सस्वन वज्र वा नाहिय हं लज मय न्ना य धादि

दिलान्वातिमाकर्षयन्॥ श्रीयजुह्वकुरुंरुंजकिनीशायसम्भनस्वाहा॥ हस्म॥ उं सर्व्व
जकिनीयवजवर्हनीयवजवे शायनीयकुरुंरुंस्वाहा॥ पुहासिधुन॥ व्याघ्रयर्म॥ धन२धन
य२वजधकुरुंस्वाहा॥ वजवे शायनीयकुरुंरुंस्वाहा॥ यकि॥ गृह्णदहमनाविनयकि नन
त्यानूयिन श्रीयजुसत्तमूडयं वहि नध्माससिद्धिं॥ वजधर्म समस्तु रुन२शानासि कुरुंरुंस्वाहा॥
कुरुल॥ श्री हहंरुंरुं॥ गृह्णदहमनाविनं वा कयज कुरुल हयं श्रीयजुसत्तमूडयं उं वज २
सूर्यतमाविधमयं समयस्तु महनत्ताधकुरुंरुंस्वाहा॥ कश्चि का दयं॥ गृह्णदहमनाविनं न
लेहं वसु कश्चि का श्रीयजुसत्तमूडय॥ ममभ्यत प्रहसिजित्तु कुरुंस्वाहा॥ रुनमकी
स्वाहा॥ उं वाषटहं रुंरुंरुंस्वाहा॥ नयकुदयं॥ गृह्णदहमनाविनं नयं क म ह्वतासक

श्री यज्ञसूक्तम् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वं हं यं जी मां जीं हं रुद्र ॥ मर्यादाय ॥
 गच्छदहमना विन न मां घसिद्धि मर्यादा श्री यज्ञसूक्तम् वहि न ध्यात्त स स्ति न ॥ ॐ श्री यज्ञ हं न
 कृत्वा दि ॥ नो पूजय पूजय न कुरु स न वं मनु म विपथि त्वा वृक्ष गृह हा न मा ल ह न न य ज पं य स
 मर्यादा ॥ ॐ क न श्रय य क रुद्र ॥ नृत्वा दि हि ॥ ॐ नृपि लिय रुद्र ॥ नृ न व ही म न म नु ॥
 ति हि ह्ना न म न पातुं ॥ स्व वा ग उ म न रु ग व न् म न म नु न ति हि न हि म नु ॥ गच्छदहमना विन
 र्य वा ग उ म न रु ग श्री यज्ञसूक्तम् वहि ह्ना त्म स स्ति न ॥ थ अ क पू वृ डा स त्वा क त्वा न
 रु डा अ जा य थ म न रु य ॥ नृ क म र्य क र्वा ग यं कुरु न ॥ ना न ह्ना यः य मृ कि न ल हि य ॥ म न
 यार्थ प नु थ स म नु ल पे द कि ना ॥ प्र वि स न रु ग व न् म हा मा नृ पू ज स र्व हि हि सू ष प दं प म म

धातुमसिद्धिर्थाजुं १ वहापसिधत् ॥ स्वनमाहा ॥ संहात्रयमेपर्यं ॥ उं यज्ञघाटयसमय
 प्रवञ्च ॥ स्वनमाहा ॥ सनं च्यु ॥ यत्र मञ्जुका मय सनत्रितविज्ञा मनामा मिजुं वहा १ ॥
 जी ५ पति च्छु भूमां जलिनाथ हा १ ॥ क्लृप्तनक्षत्रक ॥ मल्लुल्लमाहा ॥ थका
 सिष्टाहातु किष्टाहातु सजा नक्ष ॥ गम ॥ ग्राफा ॥ मत्यादयि क्लृप्तनादिनिधनपत्र १ म
 हायजुसमयसत्ताकात्रयवजुपसिधमसुवर्तुममाहासिद्धिमाहेस्वर्थादिदेवता १ मयजुध
 नागाजासिद्धिमयत्रमाकत्र १ निर्वष १ मस्वनम्यापि सर्वत्रागमनू नागिन १ नत्वनसिद्धिमरुगव
 त्महाजा ॥ ममहात्रन १ नत्वनम्यापि सर्वत्रागमनू नागिन १ नत्वनसिद्धिमरुगव
 त्महाजा ॥ ममहात्रन १ नत्वनम्यापि सर्वत्रागमनू नागिन १ नत्वनसिद्धिमरुगव
 त्महाजा ॥ ममहात्रन १ नत्वनम्यापि सर्वत्रागमनू नागिन १ नत्वनसिद्धिमरुगव

त्वमना व्यापि सर्वसत्त्वहिदिहितः सर्वसत्त्वयिगायेव काग्रसमयायिनां ॥ यनसतनसत्तुहानां प्रह
पाया सत्तुतनसत्तुमनाथकामाथयत्रिपुत्रयं ॥ ॥ पिलाअयः गमकनयस्यानवलिविय ॥
नधिनमस्कात्र ॥ अन्वदज्ञाय ॥ वागनात्रा ॥ समत्रा ॥ अन्वजाक ॥ गितयिअससाह ॥ पागमनदि ॥ अमक
॥ नमस्तु नमामिहं नमस्तु स्याह ॥ किचित्कल्पयत्रिग्रहागहलिवग्रसायवरुग्रह ॥ तस्याग्रसत्तु
जितयितुनयापाताप्रवातायसे ॥ अन्वदज्ञाय ॥ अमक ॥ नमस्तु नमामिहं नमस्तु स्याह ॥ किचित्कल्पयत्रिग्रहागहलिवग्रसायवरुग्रह ॥ तस्याग्रसत्तु
नगुजयन्मूदासर्वदा ॥ गीत ॥ हलसिल ॥ मूलाया अजाक ॥ वलिअकविसर्जन ॥ यादप्रजा अर्थ
यातकदयना अयक ॥ मूलदज्ञाय ॥ अमक ॥ नमस्तु नमामिहं नमस्तु स्याह ॥ किचित्कल्पयत्रिग्रहागहलिवग्रसायवरुग्रह ॥ तस्याग्रसत्तु
॥ अमक ॥ यादनासर्वसत्त्वसंग्रहता नमस्तु हना नमनावा जलायुजावा संस्तुतावा उपपाइकावा
नूयितावा नूयितावा संगीतावा नूयितावा नमस्तु संगितावा नमस्तु संगितावा सर्वसत्त्वमयामहाप्र

जमकुपदयतिष्ठापयितव्या॥ गीत॥ त्रित्वनकुलिन॥ वागमकुकर॥ अक॥ नत्वा सर्वतथाग
तमप्यनापनाथगुरु श्रीवशासननामस्तुवितरुभाः संज्ञानवधायुहे नृसदृशवत्तद्वृत्तांद
महर्षेस्तसाधनंतत्वननाभावहनिथागनादिसयनादहनथाकथेन॥ मृताचार्यकृपादी॥
मृताचार्यकृपाक॥

II-367

धर्मरत्नं बज्राचार्यं सुरतं श्री महाविहार

४